Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 4032–4037

# माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व प्रकार के प्रभाव का अध्ययन

रीना कश्यप [1], डॉ कविता शर्मा [2]

[1] शोधार्थिनी , मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ. उत्तर प्रदेश
[2] सहायक–आचार्य, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ. उत्तर प्रदेश

**DOI**
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.4555

**Funding:** This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

**Copyright:** © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

## ABSTRACT

व्यक्तित्व में समस्त शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों एवं गुणों के उस समुच्चय से लेते हैं जो विभिन्न परिस्थियों में उसके व्यवहार को निश्चित एवं निर्देशित करता है। व्यक्तित्व को गतिशील माना गया है। जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति के व्यक्तित्व के सम्बन्धी गुणों में परिवर्तन आते रहते हैं। हर व्यक्ति के व्यक्तित्व में कुछ न कुछ विशिष्टता होती है। बहिर्मुखता और अंतर्मुखता को आमतौर पर एक ही निरंतरता के रुप में देखा जाता है कि व्यक्तित्व में एक पक्ष का उच्च होना तथा दूसरे पक्ष का कम होना आवश्यक है। कार्ल जंग और मायर्स ब्रिग्स के लेखक इस संबंध में एक अलग दृष्टिकोण प्रदान करते हैं और सुझाव देते हैं कि हर किसी का एक बहिर्मुखी पक्ष और एक अंतर्मुखी पक्ष होता है। जो एक, दूसरे की तुलना में अधिक प्रभावशाली होता है। विद्यालय में चयनित विषयों में संतोषजनक उपलब्धि प्राप्त करना। किसी छात्र के विद्यालय के विषयों में प्राप्त उपलब्धि का पता एक लिखित प्रमाण–पत्र के रुप में चलता है। जो विद्यालय में पढ़ाए गए विषयों जैसे– अंग्रेजी, हिन्दी, विज्ञान, कला, संस्कृत गणित आदि के मूल्यांकन के द्वारा किया जाता है। एक छात्र के लिए यह एक प्रमाण–पत्र एक वर्ष की मेहनत का परिणाम होता है। कुछ विद्यालयों में मौखिक, लिखित तथा भाषा का मूल्यांकन किया जाता है। सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों का मूल्यांकन तिमाई, छमाई तथा वार्षिक आधार पर किया जाता है। इस मूल्यांकन में सफलता के लिए अंकों के प्रतिशत के आधार पर पास किया जाता है। सी. वी.गुड के शब्दों में – विद्यालय के विषयों से उत्पन्न ज्ञान की क्षमता परीक्षंक या अध्यापक के द्वारा दिए गए अंकों से मानी जाती है।

**Keywords**: व्यक्तित्व प्रकार, शैक्षिक उपलब्धि।

## 1. प्रस्तावना

शिक्षा के द्वारा ही आदतों, प्रवृत्तियों, अभिवृत्तियों एवं कार्यकारी दक्षताओं का विकास होता है। बालकों में नैतिकता को अनेक कारक प्रभावित करते हैं। सबसे अधिक प्रभाव उसके वातावरण से नैतिक, सामाजिक, मानवीय, आध्यात्मिक मूल्यों को सहज एवं स्वाभाविक ढंग से ग्रहण करता है। बाल्यावस्था में जिन संस्कारो को अर्जित किया जाता है। वे जीवन पर्यन्त बने रहते हैं और उनका दूरगामी प्रभाव पड़ता है। दूसरी तरफ मनुष्य को विशिष्ट दिशा में अग्रसर करने में सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली अप्रासंगिक दिशाहीन एवं निरर्थक सिद्ध हो रही है। ज्ञान का स्थान सूचना और शिक्षा का स्थान परीक्षा ने ले लिया है। परिणाम स्वरुप आज विश्व अत्यधिक ज्ञान विस्तार से पीड़ित है। ज्ञान के विस्तार के अनुपात में जीवन मूल्य विकसित नहीं हो पाये हैं। मानव में यही दुःख का कारण है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का जो महत्वपूर्ण स्थान है उसकी अवहेलना समाज तथा देश के द्वारा भी नहीं की जा सकती। शिक्षा के आलोक में ही राष्ट्र के बाल प्रसून पूर्णरूप से खिल पाते हैं। उसी प्रकाश में राष्ट्र के आदर्श नागरिक बनते हैं। समाज की सुख और शांति की वृद्धि का एकमात्र स्त्रोत मात्र शिक्षा ही है। शिक्षा के बिनां देश के कितने ही चैतन्य मन अंधेरे कोनों में पड़े रह जाते हैं, उनका विकास नहीं हो पाता, इस प्रकार देश की नागरिकता का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता। अतः प्रत्येक राष्ट्र जो ऊँचा उठने की महत्वकांक्षा रखता है वह जनसमूह की शिक्षा व्यवस्था करता है। देश में नन्हें बालक व भावी नागरिकों के लिए पाठशालाएं खोलता है। प्रत्येक मानववादी इस बात से सहमत होगा कि पढ़ना और लिखना शिक्षा के दो आधारभूत स्तंभ हैं और इन तक देश के प्रत्येक बालक की पहुंच होनी चाहिए। भारतीय जीवन दर्शन, भारतीय मनोविज्ञान तथा भारतीय समाजशास्त्र

**How to cite this article (APA):** Kashyap, R., and Sharma, K. (2023). Study of the Influence of Personality Type on Academic Achievement of Secondary School Students. *ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 4*(2), 4032–4037. doi: 10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.4555

जैसे साहित्य में नैतिकता व आध्यात्मिकता से सम्बन्धित ज्ञान भरा पड़ा है, साथ ही भारतीय चिंतन पर आधारित जीवन–यापन करने वाले भी व्यक्ति भारत में हैं जो एक प्रकार से व्यावहारिक जीवन का आदर्श प्रस्तुत करते हैं। इसके परिणामस्वरूप आज विश्व में सुख एवं शांति स्थापित करने के लिए अनेक देश भारत की ओर निहार रहे हैं और संभवतः भारत से उनकी यह अपेक्षा भविष्य में पूरी होगी परन्तु फिर भी सामान्यत भारत में व्यक्ति का स्वयं में तथा परिवार, पड़ोस, कार्यस्थल, नगर, जाति, समाज, देश तथा विश्व में आज ऐसा अनुचित व्यवहार देखने को मिलता है कि भारतीयों तथा अन्य देशों के निवासियों को निराशा हाथ लगती है, उन्हें भारतीय जीवन के आदर्श तो श्रेष्ठ लगते हैं परन्तु भारतीयों का व्यवहार देखकर तथा अनुभव कर आश्चर्य मिश्रित घृणा होती है। जो वास्तविक स्थिति के रूप में सामने आती है।

## 2. साहित्य समीक्षा

सम्बन्धित साहित्य से आशय पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएं विश्वकोश, प्रकाशित अनुसंधान प्रबंध, पत्रक एवं विचार विमर्श, शब्दकोश, अभिलेख तथा अन्य सूचनाओं से उपलब्ध सामग्री से होता है। पूर्व में किए गए कुछ शोध विवरण निम्नलिखित हैं –

***शंकर गणेश* (2024)** अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक–उपलब्धि एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य था शहरी तथा ग्रामीण अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियो की शैक्षिक–उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता का अध्ययन करना। सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि ग्रामीण तथा शहरी अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियो की शैक्षिक–उपलब्धि में अंतर पाया गया। शहरी अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियो की शैक्षिक–उपलब्धि ग्रामीण अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियो की शैक्षिक–उपलब्धि की अपेक्षा अधिक पाई गई।

***रीतू सिंहल (2023)*** 'अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले किशोर विद्यार्थियों की दुचिंताओं एवं व्यवसायिक रुचियों का अध्ययन' प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकत्री के द्वारा माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की दुश्चिंताओं एवं व्यवसायिक रुचियों का अध्ययन किया गया। शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य था अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले किशोर विद्यार्थियों की दुश्चिंताओं व व्यावसायिक रुचियों में अंतर होता है। सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले किशोर विद्यार्थियों की दुश्चिंताओं व व्यावसायिक रुचियों में सार्थक अंतर नहीं होता है।
अतः सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व के प्रकारों (अन्तः एवं बाह्य) का बहुत प्रभाव पड़ता है। लेकिन अन्तः एवं बाह्य व्यक्तित्व व शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध पर अभी भी शोध का अभाव है।

## 3. अध्ययन की आवश्यकता और महत्व

किशोरावस्था एक युवा व्यक्ति के जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण उम्र है जो उसके लिए अत्यंत कठिन अवधि है। छात्रों के लिए सामान्य रुप से कक्षा में सीखना व्यक्तित्व के विभिन्न कारकों के द्वारा प्रभावित होता है। स्कूल प्रशासकों एवं अध्यापकों के सामने अनेक चुनौतियाँ आती हैं सबसे बड़ी चुनौती उनके लिए यह है कि स्कूल किस हद तक छात्रों की जरूरतों के अनुकूल ढलता है और किस हद तक छात्र को सिस्टम की जरूरतों के अनुकूल ढाला जाना चाहिए। प्रत्येक छात्र का व्यक्तित्व उसके सीखने की शैली में व्यक्तिगत रुप से जुड़ा हुआ है और इससे छात्रों का शैक्षणिक प्रदर्शन प्रभावित होता है। अध्ययन से ऐसे निष्कर्ष निकलेंगे, जिनके आधार पर छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को उनके व्यक्तित्व प्रकारों के अनुरूप सुधारा जा सकता है इस कार्य के लिए पाठ्यक्रमों, शिक्षण–विधियां, शैक्षिक पुस्तकों, अध्यापकों की कार्यशैली, परीक्षाओं के मूल्यांकन आदि में सुधार लाने की आवश्यकता है। अनुसंधान इस कार्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

## 4. समस्या कथन –

**"माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व प्रकार के प्रभाव का अध्ययन"**

प्रयुक्त पदों की कार्यात्मक परिभाषा :–

**व्यक्तित्व** – व्यक्ति के भीतर उन मनोवैज्ञानिक शारीरिक प्रणालियों का गतिशील संगठन है जो उसके पर्यावरण के साथ उसके अद्वितीय समायोजन को निर्धारित करते हैं। वर्तमान अध्ययन में व्यक्तित्व जंग द्वारा परिभाषित टाइपोलॉजी है और गुणों का संयोजन

है जो किसी व्यक्ति के विशिष्ट चरित्र का निर्माण करता है जो डॉ यशवीर सिंह और डॉ हरमोहन सिंह द्वारा मापा गया बहिर्मुखी या अंतर्मुखी हो सकता है।

**बहिर्मुखी व्यक्तित्व** – बहिर्मुखी शब्द को प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जुंग ने 20 वीं शताब्दी में दिया था। बहिर्मुखी व्यक्ति की रूचि बाह्य दुनिया में अधिक होती है। ऐसे व्यक्ति अपने विचारों एवं भावनाओं को स्पष्ट करने में झिझकते नही हैं। ये व्यक्ति व्यवहार कुशल होते हैं तथा भावों के अनुसार अपने निर्णय लेते हैं। ये चिन्तामुक्त व धारा प्रवाह बोलने वाले होते हैं।

**अंतर्मुखी व्यक्तित्व** – इस श्रेणी के व्यक्ति अपने आप में ही अधिक खोए रहते हैं। ये सामाजिक रूप से कटे होने के कारण अधिक दोस्त नहीं बना पाते हैं। इनके निर्णयों में अपनी भावनात्मक स्थिति में निजता का प्रभाव होता है। ये समूह की अपेक्षा एक–एक व्यक्ति से बात करने को अधिक पसन्द करते हैं।

**शैक्षणिक उपलब्धि** – यह वह सीमा है जिस तक छात्र द्वारा शैक्षिक लक्ष्य प्राप्त किए जाते हैं। वर्तमान अध्ययन में, शैक्षणिक उपलब्धि उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों द्वारा कक्षा 12 वीं की बोर्ड परीक्षाओं में प्राप्त अंकों को संदर्भित करती है।
अध्ययन के उद्देश्य –

1. माध्यमिक स्तर पर छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अंतर्मुखता और बहिर्मुखता के प्रभाव का पता लगाना।
2. माध्यमिक विद्यालय के अंतर्मुखी लड़कियों और अंतर्मुखी लड़कों की शैक्षणिक उपलब्धि के बीच अंतर का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालय के बहिर्मुखी लड़कियों और बहिर्मुखी लड़कों की शैक्षणिक उपलब्धि के बीच अंतर का अध्ययन करना।

## 5. अध्ययन की परिकल्पनाएँ –

1. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों पर अंतर्मुखी और बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकारों का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालय की अंतर्मुखी लड़कियों और अंतर्मुखी लड़कों की शैक्षणिक उपलब्धियों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
3. माध्यमिक विद्यालय की बहिर्मुखी लड़कियों और बहिर्मुखी लड़कों की शैक्षणिक उपलब्धियों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

**शोध विधि –** अनुसंधान प्रश्न के उत्तर प्राप्त करने के लिए बनाई गई जांच की एक योजना, संरचना और रणनीति है। अध्ययन में वर्णनात्मक सह–सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया है।

**न्यादर्श आकार और चयन विधि –** शोध कार्य में न्यादर्श के रूप में कक्षा 11वीं के कुल 120 छात्र एवं छात्राओं का शोध कार्य के लिए चयन किया गया, जिसमें 40 छात्र, तथा 80 छात्राओं को चुना गया है। प्रस्तुत शोध में सरल यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक का उपयोग किया गया है। उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के लिए विभिन्न सोशल मीडिया साइटों पर गूगल फॉर्म का उपयोग करके नमूना तैयार किया गया है।

**शोध का परिसीमन** :–शोध अध्ययन का परिसीमन इस प्रकार किया गया है –
शोध अध्ययन गाजियाबाद जिले के माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित है।
शोध अध्ययन माध्यमिक विद्यालयों 40 छात्रों तथा 80 छात्राओं तक सीमित है।
प्रस्तुत अध्ययन शासकीय तथा अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित है।

**अध्ययन में प्रयुक्त चर** :–प्रस्तुत शोध में '' माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व प्रकार के प्रभाव का अध्ययन'' करना है। अतः यहां पर स्वतंत्र चर व्यक्तित्व (अंतर्मुखता बहिर्मुखता) है तथा आश्रित चर शैक्षणिक उपलब्धि है। प्रस्तुत शोध कार्य में सम्मिलित चर निम्न प्रकार हैं –

**स्वतन्त्र चर** :– व्यक्तित्व (अंतर्मुखता बहिर्मुखता), **आश्रित चर** :– शैक्षिक उपलब्धि।

## 6. अध्ययन के लिए प्रयुक्त उपकरण –

1. व्यक्तित्व सूची (बहिर्मुखता अंतर्मुखता) पीआई एस.एस. डॉ. यशवीर सिंह और डॉ. हरमोहन सिंह द्वारा निर्मित इंवेंट्री।

2. शैक्षणिक उपलब्धि स्कोर कक्षा 12 वीं बोर्ड परीक्षा में छात्रों के प्रदर्शन से लिए गए थे। केवल उन छात्रों के जवाबों पर विचार किया गया जिन्होंने सत्यापन के लिए अपनी मार्कशीट भेजी थी।

**जनसंख्या** :–शोध कार्य में न्यादर्श के रूप में कक्षा 11वीं के कुल 120 छात्र एवं छात्राओं का शोध कार्य के लिए चयन किया गया, जिसमें 40 छात्र, तथा 80 छात्राओं को चुना गया है।
आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण – आंकड़ों के विश्लेषण के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है।

**माध्यमान** – माध्यमान को अंकगणितीय माध्य या औसत भी कहा जाता है। जब किसी एक समूह के आकड़े अथवा प्राप्त अंकों को जोड़कर समूह की संख्या से विभाजित किया जाता है तो प्राप्त राशि को उस समूह के आंकड़ों का मध्यमान कहा जाता है।

**प्रमाणिक विचलन** ॅ;ण्क्ष्द्ध –. दिए हुए प्राप्तांकों के विचलनों के वर्गो में मध्यमान का वर्गमूल ही प्रमाणिक विचलन कहलाता है। दूसरे शब्दों में, यदि दिए हुए प्राप्तांकों के माध्यमान से प्राप्तांकों का विचलन ज्ञात किया जाए (विचलन ज्ञात करते समय धन व ऋण चिन्हों का ध्यान नही दिया जाता है) तथा प्रत्येक विचलन का वर्ग किया जाये ,फिर इन वर्गो को जोड़कर उसकी संख्या एन से भाग देकर प्राप्त संख्या का वर्गमूल निकालने से जो संख्या प्राप्त होती है, वह प्रमाणिक विचलन ॅ;ण्क्ष्द्ध कहलाता है।

**टी–परीक्षण** – अंतर्मुखी और बहिर्मुखी छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि की तुलना करने के लिए टी परीक्षण का उपयोग किया गया है। यह परीक्षण ऐसी परिस्थिति में लागू किया जाता है, जहां दो स्वतन्त्र समूह के मध्य अन्तर की तुलना की जाती है।

## 7. डेटा का विश्लेषण –

**परिकल्पना 1** – माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों पर अंतर्मुखता और बहिर्मुखता व्यक्तित्व प्रकारों का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है ।

| Variable | Group | N | Mean | S.D | T - value | Degree of freedom | Table value | | Level of significanc |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Academic achievement | Introvert type of stu. | 25 | 51.54 | 10.18 | 1.53 | 59 | 0.05 | 2 | Not signficant |
| | **Extrovert type of stu.** | **36** | **47.51** | **10.02** | | | **0.01** | **2.66** | |

**निष्कर्ष** – शैक्षणिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व प्रकारों का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता है।

**परिकल्पना 2** –माध्यमिक विद्यालय के अंतर्मुखी लड़कियों और अंतर्मुखी लड़कों की शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

| Variable | Group | N | Mean | S.D | T -value | Degree of freedom | Table value | | Level of significanc |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Academic achievement | Introvert girls | 11 | 48.87 | 12.67 | 1.10 | 23 | 0.05 | 2.07 | Not signkficant |
| | Introvert boys | 14 | 53.63 | 7.55 | | | 0.01 | 2.31 | |

**निष्कर्ष** – माध्यमिक विद्यालय की अंतर्मुखी लड़कियों और अंतर्मुखी लड़कों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

**परिकल्पना 3** – माध्यमिक विद्यालय के बहिर्मुखी लड़कियों और बहिर्मुखी लड़कों की शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

| Variable | Group | N | Mean | S.D. | T-value | Degree of freedom | Table value | | Level of significancs |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Academic achievement | Extrovert girls | 14 | 48.48 | 11.10 | 0.44 | 34 | 0.05 | 2.03 | **Not significant** |
| | Extrovert boys | 22 | 46.90 | 9.478 | | | 0.01 | 2.72 | |

**निष्कर्ष** – माध्यमिक विद्यालय की बहिर्मुखी लड़कियों और बहिर्मुखी लड़कों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

**सांख्यिकीय विश्लेषण** – तालिका संख्या–2 बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्र एवं छात्राओं की हाईस्कूल की शैक्षिक उपलब्धि के आंकड़े प्रस्तुत करती है। उनका औसत क्रमशः 99ण75 और 99ण75 है और उनका ॅण्क्ण क्रमशः 9ण55 और 9ण75 है। ज.का मान 0ण44 है। बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्र एवं छात्राएं एक ही स्तर के होते हैं। बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्र एवं छात्राओं की अकादमिक उपलब्धि लगभग समान है। बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्र एवं छात्राओं की हाईस्कूल की शैक्षिक उपलब्धि लगभग समान है। इसका मतलब है बहिर्मुखी व्यक्तित्व का कक्षा 11 के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

## शोध निष्कर्ष

निष्कर्षों से पता चला कि व्यक्तित्व के प्रकारों का माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।. जहां तक शैक्षणिक उपलब्धि का सवाल है, लिंग कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाता है।

## अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ :–

### अ) शिक्षकों के लिए शैक्षिक निहितार्थ –

1. हर छात्र को अपना लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रोत्साहित करें।
2. हर बच्चे को गाने और नृत्य करने के लिए मजबूर न करें।
3. व्यक्तिगत मतभेदों का सम्मान करें और कक्षा निर्देश और वातावरण को डिजाइन करने में सभी छात्रों की जरूरतों को समायोजित करें।

### ब) माता–पिता के लिए शैक्षिक निहितार्थ –

1. उन्हें अंतर्मुखी बच्चों को अपने बहिर्मुखी समकक्षों की तुलना में शैक्षणिक रूप से कमतर नहीं समझना चाहिए।
2. अपने बच्चों को उनकी अधिकतम क्षमता प्राप्त करने में मदद करने के लिए एक प्रेमपूर्ण और मैत्रीपूर्ण वातावरण प्रदान करें।

### स) छात्रों के लिए शैक्षिक निहितार्थ –

1. अंतर्मुखी छात्रों को कक्षा में अवांछित महसूस नहीं करना चाहिए।
2. बहिर्मुखी छात्रों को यह महसूस नहीं करना चाहिए कि वे पढ़ाई में कमतर हैं।
3. सभी छात्रों को अपने बारे में सकारात्मक सोच रखनी चाहिए।

### द) मार्गदर्शन और परामर्शदाताओं के लिए शैक्षिक निहितार्थ –

1. छात्रों के व्यक्तित्व लक्षणों के निदान में सहायता करें।
2. छात्रों को उनकी क्षमताओं का एहसास कराने में सहायता करें।

### य) भावी शोध के लिए सुझाव –

4. अध्ययन को अधिक विश्वसनीय एवं वैध बनाने के लिए एक से अधिक शोधकर्ताओं को अध्ययन करने हेतु सम्मिलित किया जा सकता है।
5. समय तथा धन की उपलब्ध्ता को बढ़ाकर अध्ययन में अधिक व्यापकता, गहनता तथा लगनशीलता लाने का प्रयास किया जा सकता है।
6. प्रस्तुत शोध अध्ययन को तीन ही चरों तक सीमित न करके कई चरों के परिपेक्ष्य में अध्ययन किया जा सकता है।
7. वर्तमान शोध अध्ययन के द्वारा माध्यमिक स्तर के अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है। इसी प्रकार का अध्ययन स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्याथियों को लेकर भी किया जा सकता है।

## CONFLICT OF INTERESTS

None.

## ACKNOWLEDGMENTS

None.

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सुखिया एस पी एवं महरोत्रा पी.वी. (1984) शैक्षिक अनुसंधान के मूलतत्व विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
दवे, दीपिका (2014). 21वीं सदी में महिला सशक्तिकरण रावत पब्लिकेशंस, जयपुर।

सिंह,वी.एन. (2009) आधुनिकता एवं महिला सशक्तिकरण रावत पब्लिकेशनस, जयपुर।
गुडे वीडियो जे, (1968) रिवॉल्यूशन एंड फैमिली पैटर्न दी फ्री प्रेस न्यूयॉर्क कोलियर-मैकमिलन, लंदन।
शर्मा अनुपम तथा वार्णेय संगीता (2013) 21वीं शताब्दी में महिला समस्याएं, संभावनाएं, अल्फा पब्लिकेशन नई दिल्ली।
डॉ.प्रमिला कपूर, (2006) कामकाजी भारतीय नारी, राजपाल एंड संस, दिल्ली।
सुखिया एस. पी.विद्यालय प्रशासन एवं संगठन विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
वर्मा डा. रामपाल सिहं, विद्यालय संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।